तित्थयर ISBN-2277-7865

वर्ष – 49 अंक - पंचम अप्रैल 2023

॥ जैन भवन ॥

JAIN BHAWAN
CALCUTTA

Editorial Board –

Dr.Narendra Parson

Dr.Sulekh Jain

Dr. Jitendra B. Shah

Prof.G .C.Tripathi

Shri Pradip Nahata (co-ordinator)

TITTHAYAR is accessible at our Website –
www.jainbhawan.in

For articles , reviews and correspondence kindly contact –

Dr.Lata Bothra

Chief Editor

Mobile no-9831077309,

E mail – latabothra13@yahoo.com ,
latabothra@gmail.com

संपादन

डा.किरन सिपानी

JAIN BHAWAN
CALCUTTA

We are thankful for the financial assistance given towards the online publication of our Journals from a well-wisher at California , U.S.A. .

अनुक्रमणिका

1) क्षमा धर्म – डा. लता बोथरा
2) जैनदर्शन नास्तिक नहीं, आस्तिक दर्शन है – डॉ0 शुद्धात्मप्रकाश जैन

आवरण पृष्ठ – सरस्वती प्रतिमा , फतेहपुर सीकरी , उत्तरप्रदेश

क्षमा धर्म

डा. लता बोथरा

वस्तु का मूल स्वभाव ही उसका धर्म कहा जाता है । आत्मा का मूल स्वभाव समता है इसीलिये आचारंग में **समता को धर्म** कहा गया है । अतः हमारी साधना का सर्वोपरि लक्ष्य समता की प्राप्ति होता है। जैसे जल के सिंचन के बिना वृक्ष कोई फल नहीं देता उसी प्रकार समता की उपलब्धि क्षमा की भावना के बिना नहीं हो सकती । हम ये भी कह सकते हैं कि क्षमा की भावना के बिना कोई भी साधना सफल नहीं हो सकती । अहिंसक या अहिंसा का पालन करने वाला ही क्षमाशील होता है अतः क्षमा वो साधन है जो हमें अपने साध्य या लक्ष्य तक पहुँचाता है। इसीलिये तत्वार्थ सूत्र में वर्णित 10 धर्मों में **क्षमा** , मार्दव ,आर्जव , शौच , सत्य , संयम , तप , त्याग , अकिंचनता , और ब्रह्मचर्य में प्रथम धर्म क्षमा को ही बताया गया है ।

मन की उस भावना को क्षमा कहते है जिसमें मनुष्य दूसरों के दिये कष्टों को सहन कर लेता है और कष्ट पहुँचाने वाले के प्रति कोई विकार नहीं रखता । इसमें उसे जो आध्यात्मिक संतुष्टि मिलती है वहीं उसे उत्कृष्ट साधना की ओर अग्रसर करती है । इसी के द्वारा जीव क्रोध , द्वेष आदि कषायों से मुक्त होता है । क्रोध आदि कषायों के शमन के लिये क्षमा धर्म को अपनाना आवश्यक है । महान संत कबीर ने कहा है कि **जहाँ दया तहँ धर्म , जहां लोभ तहँ पाप , जहां क्रोध तहं काल, जहाँ छिमा तहँ आप** । यानि मुक्ति को पाने के लिये क्षमा को अपने जीवन में मन वचन काया से अपनाना चाहिये क्यों कि भगवत्व की प्राप्ति क्षमा की साधना से ही प्राप्त होती है । सामायिक सूत्र में लिखा है --

जं जं मणेण काएण चिंतिय असुहं वायाइ भासियं किंचि,असुहं काएण कयं मिच्छामिदुक्कड़ं तस्स ।

मैंने मन से जो जो अशुभ चिंतन किया हो , वचन से जो जो अशुभ बोला हो तथा काया से जो जो अशुभ किया हो उन सबके लिये **मिच्छामिदुक्कड़ं** ।

क्षमा जीवन को अच्छा रखने का बहुत प्रभावी तरीका है । क्षमा को बौध परम्परा में परम तप बताया गया है **(धम्म पद 16-4) खन्ति परमं तपो तितिक्खा । संयुक्तनिकाय में लिखा है जो स्वयं बलवान होकर दुर्बल की बात सहता है उसी को श्रेष्ठ क्षमा कहते हैं ।(1-11-4)** आचार्य शान्त रक्षित ने क्षान्ति पारमिता में क्षमा धर्म का सविस्तार विवेचन किया है । वैदिक परम्परा में मनु ने 10 धर्मों में क्षमा को धर्म माना है । गीता में क्षमा को भगवान की ही एक वृति कहा गया है । महाभारत के उद्धोग पर्व में क्षमा को असमर्थ लोगों का गुण तथा समर्थ लोगों का भूषण बताते हुए क्षमा का विस्तृत विवेचन मिलता है। महाभारत में कहा गया है--- **क्षमा ब्रह्म, क्षमासत्यं, क्षमा भूतं च भावि च । क्षमा तपः, क्षमा शौचं, क्षमा येहं धतं जगत ।** अर्थात् क्षमा ब्रह्म

है, क्षमा सत्य है क्षमा भूत है क्षमा भविष्य । क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत को धारण कर रखा है । आगे लिखा है---

क्षमा धर्म, क्षमा यज्ञ, क्षमा वेद, क्षमा श्रृतम । य एतदेवं जानाति सा सर्व क्षन्तु मर्हति।

बाईबल में लिखा है -- **जो दूसरों को क्षमा करता है वह उसी प्रकार ईश्वर द्वारा क्षमा किया जाता है और जिसे ईश्वर क्षमा कर देते हैं वह उस क्षमा की प्राप्ति के साथ ही अपने सभी शत्रुओं को क्षमा कर देता है ।**

यहुदी धर्म में साल के 10 दिन क्षमा और पश्चाताप के लिये महत्वपूर्ण माने-जाते हैं । इस समय अपने परिवार , सम्बन्धियों आदि के यहाँ जा कर आपस में क्षमा का आदान प्रदान करते हैं ।

The ten days of repentance or The Days of Awe include Rosh Hshanah, Yom Kippur and the days in between,during which time ews should meditate on the subject of the holidays and ask for forgiveness from anyone they have wronged.

स्वयं को क्षमा करना ही दूसरों को क्षमा देना है जो खुद को क्षमा करता है वही सच्चा क्षमा शील है और मुक्ति प्राप्त करने का अधिकारी होता है । प्रभु महावीर के जीवन चरित्र में क्षमा देने की भावना अपने चरम रूप में परिलक्षित होती है । घोर उपसर्ग होने पर भी उन्होंने समता से सहन किया और स्वयं को क्षमा भावना में स्थिर कर कषायों को संयमित कर ध्यान में अग्रसर रहे । स्वयं को क्षमा करना क्षमा मांगने और क्षमा देने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है प्रभु महावीर का पूरा छदमस्थ जीवन इसी क्षमा भावना का अपूर्व उदाहरण है । तीक्ष्ण काष्ट श्लाकाओ के कान में ठोके जाने पर, वैद्य द्वारा उन्हे निकाले जाने की कष्टदायक पीड़ा को सहन करते हुए वो क्षमा भावना में समाधिस्थ रहे जो एक वीर पुरुष ही कर सकता है इसीलिये वर्धमान को महावीर के साथ साथ क्षमावीर भी कहा गया है ।

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो , उसको क्या जो दन्तहीन, विषरहित सरल हो ।(रामधारी सिंह दिनकर)

क्षमा की भावना महावीर में इतनी तीव्र थी कि गोशालक द्वारा जब उन पर तेजोलेश्या फेंकी गयी तब भी क्रोधित नहीं हुए और क्षमा भावना में स्थिर रहे । यह उनकी क्षमा भावना की साधना की पराकाष्ठा थी । श्री चन्द्रप्रभ सागर जी महाराज महावीर की क्षमा भावना को इन शब्दों में प्रकट करते हुए कहते हैं----

जहाँ **एक आश्चर्य घटित हुआ , एक सत्य प्रकट हुआ, रक्त पिपासा की प्यास बुझाने हेतु , एक धार अविरल बही, क्या यह रक्त है, नहीं यह दुग्ध है, क्षमा का अनुपम श्रोत है, आत्म संबल जिसका स्तम्भ, करुणा का प्रतिबिम्ब, दया का सागर, अहिंसा का अमर गायक, खड़ा है निर्भय, निश्चल**

महावीर । क्रोध की ज्वाला और क्षमा का दूध, लौह और पारस , चण्डकौशिक और महावीर, किन्तु क्या हुआ, क्रोध के आगे क्षमा की , हिंसा के आगे अहिंसा की अपूर्व विजय, क्षमा की अद्भुत विजय ।(चन्द्रप्रभ सागर जी महाराज)

स्वयं को क्षमा करना ही स्वयं का सम्मान करना है। महावीर का गौतम स्वामी को आनन्द श्रावक से क्षमा मांगने को भेजना क्षमा के महत्व को परिलक्षित करता है ।

क्षमा की भावना सब मानवीय भावनाओं में सर्वश्रेष्ट कही गयी है । संवेदना , करुणा , दया , सहनशीलता, विनय आदि गुणों को धारण करने वाला ही क्षमा दे सकता है ,क्षमा मांग सकता है । भ. महावीर ने सिर्फ मानवों तक ही क्षमा को सीमित नहीं रखा बल्कि एकेन्द्रिय दिवेन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय तथा सभी पंचेन्द्रिय जीवों से भी क्षमा मांगने और देने का महत्व बताया। आवश्यकता से अधिक प्रयोग या दोहन चाहे वो पानी का हो या खनिज प्रदार्थों का या वनस्पतिकाय का सभी के लिये क्षमा के रूप में प्रायश्चित करने का विधान हमारे शास्त्रों में सबसे अधिक विस्तृत रूप में मिलता है । अपने उपयोग से अधिक का संग्रह करने या अपनी जरुरत से ज्यादा संसाधनों का उपभोग करने से भी प्रायश्चित करने का उल्लेख है जो जैन जीवन शैली में नित्य प्रतिक्रमण और सामायिक करने की प्रक्रिया द्वारा किया जाता है । इन सूत्रों का उद्देश्य स्वयं को क्षमाशील बनाना है जैसे इरियावहियं सूत्र --- **इरियावहीयाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्मकणे , ओसा-उत्तिंग-पणग- दग- मट्टी- मक्कड़ा संताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया , संघाइया, संगट्टिया .....तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ।**

उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है - क्षमा करने से मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है । और मानसिक प्रसन्नता को प्राप्त व्यक्ति सब प्राण भूत जीव और सत्वों के साथ मैत्री भाव उत्पन्न करता है। मैत्री भाव को प्राप्त हुआ जीव भावना को विशुद्ध बना कर निर्भय हो जाता है ।

दुर्गा सप्तपदी में क्षमा प्रार्थना नामक अध्याय में लिखा है - हे माँ मेरे द्वारा सहस्त्रों अपराध अज्ञानवश , भूल से या बुद्धि भ्रम हो जाने से होते हैं उन्हे तुम क्षमा करो ।

हम अनजाने मे किये पापों के प्रायश्चित की बात भी करते हैं क्यों कि अनजाने में किये पापों का हमें पता ही चलता जैसे हम एक गमले के पौधे में पानी डालते हैं उस गमले के नीचे चीटियाँ होती हैं जिनका हमें पता नहीं होता और वो मर जाती हैं इस प्रकार अनजाने में यह पाप हमसे हो जाता है जिसके लिये हम प्रयश्चित करते हैं क्षमा एक उपचार भी है , यदि आपको किसी ने कष्ट पहुँचाया तो उसकी सबसे अच्छी दवा है क्षमा । और यदि आपने किसी को कष्ट दिया है तो उसकी भी सबसे अच्छी दवा है क्षमा ।

Forgiveness is about goodness, about extending mercy to those who have harmed us even if they don't deserve it .

क्षमा की भावना एक तरह से **psychological healing** का काम करती है ।

Act of forgiveness can reap huge reward for your health, lowering the risk of heart attack, improving cholestial level and reducing pain, blood pressure and level of anxiety, depression and stress .

क्षमा एक प्रकार से कैदी को बन्धनों से मुक्त करती है जबकि वह कैदी हम स्वयं हैं। मेरी एक परिचित महिला हैं जिनको कैंसर हो गया था। वह रात दिन क्षमा की भावना को अपनी अन्तर प्रेरणा से इरियावही सूत्र द्वारा दोहराती और इस प्रकार स्वंय को उन्होंने स्वस्थ किया । मृत्यू के समय हमारे यहां संलेखना या संथारा की प्रक्रिया में क्षमाभावना मे स्थिर रहने की बात कहा गयी है । इसी प्रकार बनारस में काशी लाभ मुक्ति भवन है जहां लोग अन्त समय 2 सप्ताह के लिये मुक्ति पाने आते हैँ । उस समय सबसे महत्वपूर्ण जो काम उनको कराया जाता है वह क्षमा देने और माँगने का होता है।

वर्तमान में रेकी हीलिंग , विपश्यना और प्राणी हीलिंग जैसी उपचार की पध्यति जो चलन में है उनमें भी क्षमा की भावना ही परिलक्षित होती है । आज से लगभग 15 वर्ष एक पूर्व मेंरी एक मित्र ने जो इन्डोनेशिया से प्राणी हीलिंग का कोर्स कर के आईं थी उन्होंनें बताया कि वहाँ जो सिखाते हैं वो बिल्कुल हमारे सामायिक और प्रतिक्रमण की तरह है विशेष कर मुँहपत्ती प़डिलेहन की विधी । आज स्वयँ रेकी मास्टर होने के कारण मैं जीवन में क्षमा के महत्व को अच्छी तरह समझती हूँ । आज के मनोवैज्ञानिक डाक्टर **past life regression** में क्षमा द्वारा लाइलाज रोगों का इलाज करते है जो काफी हद तक सफल माना जाता है । मैंने भी इसका अनुभव किया है । हमारे दर्शन में जब हम क्षमापना करते हैं तो पूर्व जन्मों के किये पाप कर्मों के लिये भी प्रायश्चित करते हैं

चिर संचिय पाव पणासणीइ, भव सय सहस्स महणीए । चउवीस जिण विणिग्गय कहाइ बोलंतु में दिअहा ।

(वंदितु सूत्र)

चिर काल से संचित पाप कर्मों को नष्ट करने वाली और लाखों भवों को नष्ट करने वाली चौबीस जिनेश्वरो के मुख से निकली कथाओं से मेरे दिन व्यतीत हों ।

हमारी क्षमा याचना में सभी जीव जगत सम्मिलित होता है । यदि हम क्षमा के महत्व को समझ ले तो डिप्रेशन या मानसिक तनाव जो वर्तमान पीढ़ी में बहुत देखा जा रहा है वो समाप्त हो जायेगा ।

अतीत का क्रोध, भविष्य से भय कि कल क्या होगा ,वर्तमान से पलायन ,प्रकृति से खिलवाड़ , स्व केन्द्रित स्वार्थ और सिर्फ अपनी आत्मतुष्टि के विषय में सोचना रुग्णता का परिचायक है। आज

इन नकारात्मक विचारों से सारी दुनिया त्रस्त है, समस्त जीव जगत का अस्तित्व खतरे में है । सिर्फ स्वयं के लिये सुरक्षा की भावना विश्व में आतंकवाद, साम्राज्यवाद हथियारों की प्रतिस्पर्धा खतरनाक रोगों की उत्पति और पर्यावरण के विनाश का एक प्रमुखकारण बन चुकी है। मानवता को इस भीषण त्रासदी से बचाने के लिये हमें तीर्थंकरो के दिखाये मार्ग पर चलने की आवश्यकता है । जैसा व्यवहार हम अपने लिये दूसरों से चाहते है वैसा ही दूसरे से करें , परस्परोपग्रहोजीवानाम के सिधान्त पर चलें , स्वयं द्वारा अपने चारों व्याप्त वातावरण को जरा भी क्षति या पीड़ा नहीं पहुँचाएँ , सभी के प्रति संवेदनशील बनें और सबके प्रति क्षमा भाव रखें । महावीर ने आचारंग में कहा है -- **सर्व प्राण,भूत जीव , सत्व का हनन ना करना, को वलात् आज्ञानुवर्ती न करना,को परितप्त न करना , को संतप्त न करना यही धर्म नित्य और शास्वत शुद्ध है** । हमारे अन्दर संवेदना का अविर्भाव ही हमें क्षमाशील बनाता है। गुजरात के प्रसिद्ध कवि नरसिंह मेंहता ने मानव धर्म का सार इन शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा है --

वैष्णव जन तो तैने कहिये जे पीर पराई जाने रे ।

जो दूसरों की पीड़ा को समझता है वही संवेदनशील उदारमय, करुणाशील होता है और क्षमाशील भी । भगवान महावीर ने विश्व के सामने क्षमा धर्म का जो महामार्ग दिखाया वही आज की ज्वलन्त समस्याओं का निदान है । तीर्थंकरों द्वारा बताये क्षमा धर्म द्वारा ही हम अपने पूर्व भवों के संचित पाप कर्मों से निवृत हो सकते हैं।

दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद अपने व्क्तव्य में अमेंरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा था – **किसी के प्रति दुर्भाव नहीं ,सभी के प्रति उदारता ,प्रभु के दिखाये मार्ग पर दृढ़ता के साथ चलें** । उनके ये शब्द क्षमा की भावना को ही उजागर करते हैं । सभी जीव जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता । विश्व में प्रेम, अभय और शान्ति के लिये हमें क्षमा धर्म की भावना को सही रूपमें अर्थ समझना होगा । क्योंकि क्षमा की गंगा में अवगाहन करने से ही मानवता का पूर्ण विकास संभव है । सभी जाति , धर्म ,सम्प्रदायवाद से ऊपर उठ कर **मित्ति में सव्व भुएसु बैरं मज्झं न केणई** मेरी सभी से मैत्री है मैं किसी का विरोधी नहीं यह भावना सारे आग्रहों को समाप्त करने में सक्षम है । यही क्षमा धर्म है ।यही मानवता है ,मुक्ति का महामार्ग है , धार्मिक आतंकवाद से त्रस्त मानवता का त्राण है , उसकी शरण है, उसकी प्रतिष्ठा है । वक्तव्य का समापन करते हुए --

सव्वस्स जीव रासिस्स भावओ धम्म निहि अनि अचित्तो , सव्वं खमावइत्ता , खमामि सव्वस्स अहय़ँपि ।

धर्म में चित्त को स्थिर करके सम्पूर्ण जीवों से मैं अपने अपराध की क्षमा चाहती हूँ, और स्वयँ भी उनके अपराध को ह्रदय से क्षमा करती हूँ ।

जैनदर्शन नास्तिक नहीं, आस्तिक दर्शन है

डॉ0 शुद्धात्मप्रकाश जैन

निदेशक, क. जे. सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र,

सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुम्बई

समस्त भारतीय दर्शनों को दो विभागों में विभाजित किया गया है– आस्तिक और नास्तिक। इस विभाजन का आधार पाप–पुण्य, स्वर्ग–नरक, लोक–परलोक, आत्मा–परमात्मा आदि के आधार पर न होकर मात्र यह परिभाषा है– ''**वेदनिन्दको नास्तिकः**'' अर्थात् जो वेदों को अस्वीकार करे, वह नास्तिक है, इस आधार पर जैन, बौद्ध और चार्वाक– ये तीन दर्शन नास्तिक कहे जाते हैं।

इस सन्दर्भ में दो बातें विचारणीय हैं, जिनमें से प्रथम यह है कि– जिन वेदों और पुराणों में ऋषभदेव, अरिष्टनेमि और पार्श्वनाथ आदि जैन तीर्थंकरों का नामस्मरण किया गया है, उन वेदों की जैनदर्शन निन्दा कैसे कर सकता है? वहां कई स्थानों पर ऋषभदेव, उनके पुत्र भरत, अरिष्टनेमि आदि का बहुत आदर से उल्लेख किया गया है।

दूसरी बात यह है कि– वेदों पर जैन अहिंसा का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। जहां जैन तीर्थंकरों ने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि को जीव कहकर उनके प्रति यत्नाचार का उपदेश दिया है। उसी के अनुसार वेदों में इन एकेन्द्रिय जीवों की संस्तुति की गई है और उन्हें देवता कहकर उनके प्रति संयम पालन की प्रेरणा दी गई है। पानी को वरूण, वायु को मरूत्, अग्नि को अग्नि, वनस्पति के लिए अनेक प्रकार की प्रजाति के वृक्षों के नामादि वहां उपलब्ध होते हैं।

अतः उक्त परिभाषा **'वेदनिन्दको नास्तिकः'** के आधार पर हम जैनदर्शन को नास्तिक का आधार नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह परिभाषा एकांगी है। इस प्रकार की मान्यता संकुचित दृष्टिकोण की द्योतक है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक दर्शन के छह निकाय हैं– सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा। ये सभी निकाय वेदों को स्वीकार करते हैं। और जब यह परिभाषा बनाई गई होगी, उस समय उस समिति में उपस्थित अधिकांश विज्ञजन वेदों के समर्थक ही रहे होंगे, क्योंकि नौ दर्शनों में से छह दर्शन वेदों के समर्थक हैं, अतः यह परिभाषा सत्य के ज्यादा करीब न होकर बहुमत के ज्यादा करीब है।

यदि ऐसी ही एकांगी परिभाषा बनाई जाये तो यह भी कहा जा सकता है कि जो ''**आगमनिन्दको नास्तिकः**''। लेकिन यह संकुचित परिभाषा मानी जायेगी, इसलिए यही कहना उचित होगा कि नास्तिक वही होता है, जो पाप–पुण्य, स्वर्ग–नरक, लोक–परलोक, आत्मा–परमात्मा आदि को नहीं माने। जैनदर्शन इन सभी को स्वीकार करता है, अतः वह आस्तिक ही सिद्ध होता है।

दरअसल परिभाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें किसी को हीन और किसी को उच्च नहीं दिखाया जाये। अतः समस्त भारतीय दर्शनों को वैदिक दर्शन और अवैदिक दर्शन के रूप में विभाजित किया जा सकता है अथवा श्रमण दर्शन और श्रमणेतर दर्शन के रूप में भी विभाजित किया जा सकता है।[1]

डॉ. अनेकान्त जैन ने अपनी पुस्तक 'जैनधर्मः एक झलक' में लिखा है कि– ''वेदनिन्दको नास्तिकः' जैसे आग्रहपूर्ण लक्षण के अनुसार भी जैनदर्शन को नास्तिक नहीं कहा जा सकता है। जैनागमों को देखें तो महावीर ने कहीं भी वेदों की निन्दा नहीं की है। परम वीतरागी भगवान जो राग–द्वेष से पूर्णतः मुक्त थे वे किसी की निन्दा कैसे कर सकते थे? वैदिक यज्ञादि में पशुबलि आदि की जो विकृतियां थीं, वे उन्हें उचित नहीं लगीं। धर्म–अधर्म का भेदज्ञान करवाना तो हर ज्ञानी व्यक्ति का कर्तव्य है। वैदिक परम्परा को भगवान महावीर का ऋणी होना चाहिए कि उन्होंने हिंसा जैसे महापाप से बचाकर यज्ञादि को पवित्र बना दिया।

'वेद' शब्द का अर्थ 'ज्ञान' होता है और ज्ञान–दर्शन को आत्मा का लक्षण मानने वाले केवलज्ञानी भगवान महावीर ज्ञान की निन्दा या निषेध कैसे कर सकते हैं? वेद में प्रतिपादित दर्शन या मान्यता से यदि कोई वैमत्य रखता है तो यह नास्तिकता का आधार इसलिए नहीं हो सकता, क्योंकि वैदिक दर्शनों की ही अनेक मान्यताएं एक–सी नहीं हैं, प्रत्युत परस्पर विरोधी हैं और यदि किन्हीं कारणों से ऐसा है तो अवैदिक दर्शन कहे जाने वाले जैनदर्शन ने ऐसा कौनसा गुनाह किया है जिस कारण कुछ चिंतक उसे नास्तिक कहने का दार्शनिक अपराध इस आधुनिक स्वतंत्र चिन्तन के विकसित युग में भी करते जा रहे हैं।''[2]

कुछ लोगों का कहना है कि जब ईश्वर कर्ता ही नहीं है, तो वह सर्वशक्तिमान कैसा? वह ईश्वर ही कैसा? अतः जैनदर्शन की अकर्तृत्व धारणा के कारण वे लोग उसे नास्तिकता का करार दे देते हैं, जबकि ईश्वर के सर्वशक्तिमान होते हुए भी कोई किसी का कर्ता नहीं है– ऐसी धारणा जैनदर्शन की है, जिसे समझने के लिए गहरे अध्ययन की आवश्यकता है। आधुनिक युग के प्रख्यात भौतिकशास्त्री **स्टीफन हॉकिन्स** ने भी घोषणा की है कि इस ब्रह्माण्ड को ईश्वर ने नहीं बनाया। अतः ईश्वर के सच्चे स्वरूप की व्याख्या

---

[1] जैन न्याय की भूमिका, जैन विद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी, पृष्ठ– 36

[2] डॉ. अनेकान्त जैन, जैनधर्म : एक झलक, आचार्य शांतिसागर छाणी स्मृति ग्रन्थमाला, बुढ़ाना, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., पृष्ठ– 59

करना जैनधर्म की अपनी मौलिक विशेषता है। ईश्वर को कर्ता–धर्ता मानना ही ईश्वर को मानना है यह तो दोषपूर्ण लक्षण हुआ। अनेक बड़े दार्शनिकों ने यह माना है कि जैनधर्म दर्शन आस्तिक है।

जैनदर्शन की नास्तिकता का विरोध करते हुए अनेक विद्वानों ने अपने विचार समय–समय पर प्रकट किये हैं। यहां **प्रो0 मण्डन मिश्र महोदय** का संस्कृत भाषा में निबद्ध निम्न उद्धरण दृष्टव्य है–

''दर्शनान्तरेषु जैनदर्शनं नास्तिकमिति प्रतिपादितमस्ति, तस्य च कारणं वेदानां प्रामाण्यस्वीकाराभाव एव। किन्त्वेतद्विषये 'नास्तिक' शब्दो न युज्यते। यतो हि 'अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः' (पा0 सू0 4/4/30) इत्यनुसारं नास्ति दिष्टमिति मतिरस्य यस्य स नास्तिक इत्येवार्थं शब्दोऽयं कथयति, तदनुसारं च परलोकसत्तां स्वीकुर्वाणा आस्तिका अन्ये च नास्तिका इति वक्तुं युज्यते। जैनदर्शनं तद्विषये नास्ति मौनभाक्। अतो नास्ति नास्तिकं जैनदर्शनमित्येव साधीयः।''[3]

इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है– जैनदर्शन को अन्य दर्शनों ने नास्तिक माना है, किन्तु उसका कारण मात्र वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार न करना ही है, किन्तु इसके लिए नास्तिक शब्द का प्रयोग करना उचित नहीं है। क्योंकि पाणिनीसूत्र 4/4/30 'नास्ति दिष्टं मतिः 'के अनुसार जिसके पास बुद्धि नहीं है, वही नास्तिक कहा जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि जो परलोकादि को स्वीकार करे, वह आस्तिक और जो न करे वह नास्तिक। जैनदर्शन इस विषय में मौन नहीं है, अतः जैनदर्शन को नास्तिक नहीं कहा जा सकता।

संस्कृत वैयाकरण **पाणिनी** के अनुसार जो लोक–परलोक को नहीं मानता, वह नास्तिक है। अतः इस आधार पर भी महावीर के दर्शन को नास्तिक कहना गलत है, क्योंकि लोक–परलोक की व्याख्या भगवान महावीर ने बहुत की है और जैनाचार्यों ने तिलोयपण्णत्ति तथा तत्वार्थसूत्र जैसे ग्रन्थों में स्वर्ग–नरक की सघन व्याख्या की है। जैनधर्म में पाप–पुण्य आदि की व्याख्या भी बहुतायत से प्राप्त होती ही है।

प्रो. महेन्द्र कुमार जैन न्यायाचार्य के अनुसार– ''श्रमणधारा वैदिक परम्परा को न मानकर भी आत्मा, जड़भिन्न ज्ञानसन्तान, पुण्य–पाप, परलोक, निर्वाण आदि में विश्वास रखती है, अतः पाणिनी की परिभाषा के अनुसार आस्तिक है। वेद को या ईश्वर को जगत् का कर्ता न मानने के कारण श्रमणधारा को नास्तिक

[3]प्रो0 मण्डनमिश्र, भूतपूर्व कुलपति, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली, श्री महावीर परिनिर्वाण स्मृति ग्रन्थ, खण्ड–3, पृष्ठ–1, 1975

कहना उचित नहीं है, क्योंकि अपनी अमुक परम्परा को न मानने के कारण यदि श्रमण नास्तिक हैं तो श्रमण–परम्परा को न मानने के कारण वैदिक भी मिथ्यादृष्टि आदि विशेषणों से पुकारे गये हैं।''[4]

इस संदर्भ में **डॉ0 मंगलदेव शास्त्री** लिखते हैं– ''भारतीय दर्शन के विषय में एक परम्परागत मिथ्या भ्रम का उल्लेख करना भी हमें आवश्यक प्रतीत होता है। कुछ समय से लोग ऐसा समझने लगे हैं कि भारतीय दर्शन की आस्तिक और नास्तिक दो शाखाएं हैं। तथाकथित वैदिक दर्शनों को आस्तिक दर्शन और जैन–बौद्ध जैसे अवैदिक दर्शनों को 'नास्तिक दर्शन' कहा जाता है। वस्तुतः यह वर्गीकरण निराधार ही नहीं, नितान्त मिथ्या भी है। आस्तिक और नास्तिक शब्द 'अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः' इस पाणिनी सूत्र के अनुसार बने हैं। मौलिक अर्थ उनका यही था कि परलोक की सत्ता को मानने वाला आस्तिक और न मानने वाला नास्तिक कहलाता है। स्पष्टतः इस अर्थ में जैन और बौद्ध दोनों दर्शनों को नास्तिक कहा ही नहीं जा सकता। इसके विपरीत हम तो यह समझते हैं कि शब्द–प्रमाण की निरपेक्षता से वस्तुतत्व पर विचार करने के कारण दूसरे दर्शनों की अपेक्षा उनका अपना एक आदरणीय वैशिष्ट्य ही है।''[5]

पं. कैलाशचन्द्र सिद्धान्ताचार्य ने भी अपनी पुस्तक 'जैनधर्म' में लिखा है कि– ''जो वैदिक धर्म वाले जैन धर्म को नास्तिक कहते हैं, वे वैदिक धर्म को न मानने के कारण ही ऐसा कहते हैं, किन्तु ऐसी स्थिति में तो सभी धर्म परस्पर में एक–दूसरे की दृष्टि में नास्तिक ही ठहरेंगे। अतः शास्त्रीय दृष्टि से जैनधर्म आस्तिक है।''[6]

जैन दर्शन की नास्तिकता का खण्डन करते हुए आधुनिक हिन्दी **कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** लिखते हैं कि–

जैन को नास्तिक भाखै कौन?

परम धरम जो दया अहिंसा सोई आचरत जौन।

सत कर्मन को फल नित मानत अति विवके के भौन।

तिनके मतहि विरुद्ध कहत जो महामूढ है तौन।[7]

---

[4] प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, तत्वार्थवृत्ति, प्रस्तावना, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ–78

[5] उद्धृत, जैनदर्शन, महेन्द्र कुमार जैन, न्यायाचार्य, प्राक्कथन, पृष्ठ–15

[6] जैनधर्म, पं. कैलाशचन्द्र सिद्धान्ताचार्य, श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ, पृष्ठ– 173

[7] भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जैन कौतूहल, पद–7 भारतेन्दु समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ– 38

अर्थात् जैन को नास्तिक कौन कहता है? जो जैन दया, अहिंसामयी परमधर्म का आचरण करते हैं, जो सदा ही विवके के स्थान रहे हैं तथा सदैव सत्कर्मों के फल को मानते हैं– ऐसे जैनियों के श्रेष्ठ धर्म को जो लोग नास्तिक कहते हैं, वे महामूढ़ हैं।

प्रकाण्ड विद्वान पद्मभूषण **पं0 माखनलाल चतुर्वेदी** ने लिखा है– ''मैं तो जैनधर्म को आस्तिक धर्म मानता हूं, क्योंकि वह ईश्वर को तथा परलोक को भी स्वीकार करता है।'' लोक–परलोक और ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने वाले जैन धर्म के विषय में कैसे कहा जा सकता है कि वह नास्तिक दर्शन है?

आधुनिक हिन्दी कवि **रामधारीसिंह 'दिनकर'** लिखते भी हैं कि– ''नास्तिक सिर्फ चार्वाक दर्शन ठहरता है तथा बौद्ध दर्शन का केवल वह सम्प्रदाय, जो आत्मा का अस्तित्व नहीं मानता। हिन्दुओं के अन्य सभी दर्शन जिनमें जैनदर्शन और बौद्ध दर्शन भी सम्मिलित हैं, आत्मा को मानते हैं, आत्मा के आवागमन को मानते हैं, मोक्ष यानी आवागमन से छुटकारे के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं और पूरे बल के साथ यह भी मानते हैं कि इस मोक्ष को प्राप्त करने के उपाय भी हैं। फिर यह बात समझ में नहीं आती कि जैन दर्शन को हम नास्तिक क्यों कहें? जैन दर्शन उतना ही आस्तिक या नास्तिक है, जितना कि हिन्दुओं का कोई भी दर्शन।''[8]

इस विषय में **डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा** लिखते हैं कि– ''जैन धर्म नास्तिक नहीं है। जीव की सत्ता में विश्वास करने वाला नास्तिक हो नहीं सकता। झगड़ा इतना ही है कि एक ही आत्मा सब में व्याप्त है या सब आत्मा अलग–अलग है।''[9] काशी विद्यपीठ के पूर्व कुलपति **डॉ. सम्पूर्णानन्द** भी लिखते हैं कि– ''जैन दर्शन वस्तु को सत्य मानता है। यह बात शंकर अद्वैतवाद के विरुद्ध तो है, परन्तु आस्तिक विचारधारा से असंगत नहीं है। उसका अनीश्वरवादी होना भी स्वतःनिन्द्य नहीं है। परम आस्तिक सांख्य और मीमांसा शास्त्रों के प्रवर्तकों को भी ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने में अनावश्यक गौरव की प्रतीति होती है। वेद को प्रमाण न मानने के कारण जैन दर्शन की गणना नास्तिक विचारशास्त्रों में है, परन्तु कर्मसिद्धान्त, पुनर्जन्म, तप, योग, देवादि विग्रहों में विश्वास जैसी कई बातें हैं जो थोड़े से उलटफेर के साथ भारतीय आस्तिक दर्शनों तथा जैन और बौद्ध दर्शनों की समान रूप सम्पत्ति है।''

इसी प्रकार के विचार **डॉ. दरबारीलाल कोठिया** भी व्यक्त करते हैं– ''भारतीय दर्शनों को आस्तिक और नास्तिक दर्शनों के रूप में भी विभाजित कर उनके कथन करने का प्रचलन है.... पर इस विभाग का कोई मजबूत या सबल आधार प्राप्त नहीं है। ईश्वर को मानने और न मानने के आधार पर यदि आस्तिक

---

[8] रामधारीसिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ– 111

[9] हिन्दुओं के आराध्य भगवान महावीरः एक विशिष्ट चिन्तन, दिशाबोध पत्रिका– नवम्बर–दिसम्बर 2004, पृष्ठ– 27

और नास्तिक माने जाएं तो निरीश्वरवादी सांख्य और मीमांसा– दोनों दर्शन ईश्वर को स्वीकार न करने तथा ईश्वर का निषेध करके ब्रह्म को अंगीकार करने से वेदान्त दर्शन– ये तीनों नास्तिक दर्शन कहे जावेंगे और नास्तिक कहे जाने वाले जैन और बौद्ध ये दोनों दर्शन क्रमशः अर्हत् और बुद्ध के रूप में ईश्वर को स्वीकार करने से नास्तिक दर्शन नहीं कहे जा सकेंगे।''[10]

आस्तिक शब्द ही अस्ति से बना है, जिसका अर्थ है– सत्ता। अर्थात् जो आत्मा–परमात्मा, लोक–परलोक आदि की सत्ता को स्वीकार करे वही आस्तिक होता है। इसी अर्थ सम्पुष्ट करते हुए **पं. कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री** भी लिखते हैं कि– ''जो धर्म ईश्वर को सृष्टि का कर्ता और वेदों को ही प्रमाण मानते हैं, वे जैनधर्म की गणना नास्तिक धर्मों में करते हैं, क्योंकि जैन धर्म न तो ईश्वर को सृष्टिकर्ता मानता है और न वेदों के प्रामाण्य को ही स्वीकार करता है, किन्तु जो ईश्वर को सृष्टिकर्ता नहीं मानता और न वेदों को प्रमाण मानता है, वह नास्तिक है– नास्तिक शब्द का यह अर्थ किसी भी विचारशील शास्त्रज्ञ ने नहीं किया। बल्कि जो परलोक नहीं मानता, पुण्य–पाप नहीं मानता, नरक–स्वर्ग नहीं मानता, परमात्मा को नहीं मानता, वह नास्तिक है– नास्तिक शब्द का यही अर्थ पाया जाता है। इस अर्थ की दृष्टि से जैन धर्म घोर आस्तिक ही ठहरता है, क्योंकि वह परलोक मानता है, आत्मा को स्वतंत्र द्रव्य मानता है, पुण्य–पाप और स्वर्ग–नरक मानता है तथा प्रत्येक आत्मा में परमात्मा होने की शक्ति मानता है। इन सब बातों का विवेचन पहले किया गया है। इन सब मान्यताओं के होते हुए जैनधर्म को नास्तिक नहीं कहा जा सकता । जो वैदिक धर्म वाले जैनधर्म को नास्तिक कहते हैं, वे वैदिक धर्म को न मानने के कारण ही ऐसा कहते हैं। किन्तु ऐसी स्थिति में तो सभी धर्म परस्पर में एक–दूसरे की दृष्टि में नास्तिक ही ठहरेंगे। अतः शास्त्रीय दृष्टि से जैन धर्म परम आस्तिक है।''[11]

इस प्रकार सम्पूर्ण विवेचन के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि जैनदर्शन नास्तिक दर्शन नहीं, अपितु आस्तिक दर्शन है।

---

[10] जैनधर्म, सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, द्वितीय संस्करण, प्राच्य श्रमण भारती मुजफ्फरनगर,प्राक्कथन, पृष्ठ–19

[11] जैनधर्म, सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, द्वितीय संस्करण, प्राच्य श्रमण भारती मुजफ्फरनगर, 2005

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. *Bhagavatī-Sūtra* - Text edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes ;
   Vol - I (*śatakas 1 - 2*) Price : Rs. 150.00
   Vol - II (*śatakas 3 - 6*) 150.00
   Vol - III (*śatakas 7 - 8*) 150.00
   Vol - IV (*śatakas 9 - 11*) ISBN : 978-81-922334-0-6 150.00
2. James Burges - *The Temples of Śatruñjaya,* 1977, pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00
   [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]
3. P.C. Samsukha -- *Essence of Jainism* ISBN : 978-81-922334-4-4
   translated by Ganesh Lalwani, Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - *Thus Sayeth Our Lord,* Price : Rs. 50.00
   ISBN : 978-81-922334-7-5
5. *Verses from Cidananda*
   translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - *Jainthology* ISBN : 978-81-922334-2-0 Price : Rs. 100.00
7. G. Lalwani and S. R. Banerjee- *Weber's Sacred Literature of the Jains*
   ISBN : 978-81-922334-3-7 Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee - *Jainism in Different States of India*
   ISBN : 978-81-922334-5-1 Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Introducing Jainism* Price : Rs. 30.00
   ISBN : 978-81-922334-6-8
10. K.C.Lalwani - *Sraman Bhagwan Mahavira* Price : Rs. 25.00
11. Smt. Lata Bothra - *The Harmony Within* Price : Rs. 100.00
12. Smt. Lata Bothra - *From Vardhamana to Mahavira* Price : Rs. 100.00
13. Smt. Lata Bothra- *An Image of Antiquity* Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* (2nd edn) ISBN : 978-81-922334-1-3
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Samskriti ki Kavita,*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - *Nilāñjanā*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - *Candana-Mūrti,,*
   translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 50.00
5. Ganesh Lalwani - *Vardhamān Mahāvīr* Price : Rs. 60.00
6. Ganesh Lalwani - *Barsat kī Ek Rāt*, Price : Rs. 45.00
7. Ganesh Lalwani - *Pañcadasī* Price : Rs. 100.00
8. Rajkumari Begani - *Yado ke Aine me*, Price : Rs. 30.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Prakrit Vyākaraṇa Praveśikā* Price : Rs. 20.00
10. Smt. Lata Bothra - *Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra* Price : Rs. 15.00
11. Smt. Lata Bothra - *Sanskriti Ka Adi Shrot, Jain Dharm* Price : Rs. 20.00
12. Smt. Lata Bothra - *Vardhamana Kaise Bane Mahāvir* Price : Rs. 15.00
13. Smt. Lata Bothra - *Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan* Price : Rs. 10.00
14. Smt. Lata Bothra - *Bharat me Jain Dharma* Price : Rs. 100.00
15. Smt. Lata Bothra - *Aadinath Risabdav Aur Austapad* Price : Rs. 250.00
    ISBN : 978-81-922334-8-2
16. Smt. Lata Bothra - *Austapad Yatra* Price : Rs. 50.00
17. Smt. Lata Bothra - *Aatm Darsan* Price : Rs. 50.00
18. Smt. Lata Bothra - *Varanbhumi Bengal* Price : Rs. 50.00
    ISBN : 978-81-922334-9-9

Bengali:

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Sanskritir Kavitā* Price : Rs. 20.00
3. Puran Chand Shymsukha - *Bhagavān Mahāvīra O Jaina Dharma.* Price : Rs. 15.00
4. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Praśnottare Jaina Dharma* Price : Rs. 20.00
5. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Mahāvīr Kathāmrita* Price : Rs. 20.00
6. Dr. Jagat Ram Bhattacharya- *Daśavaikālika sūtra* Price : Rs. 25.00
7. Sri Yudhisthir Majhi- *Sarāk Sanskriti O Puruliar Purākirti* Price : Rs. 20.00
8. Dr. Abhijit Battacharya - *Aatmjayee* Price : Rs 20.00
9. Dr Anupam Jash - *Acaryya Umasvati'r Tattvartha Sutra* (in press)
   ISBN : 978-93-83621-00-2

Journals on Jainism :

1. *Jain Journal* (ISSN : 0021 4043) A Peer Reviewed Research Quarterly
2. *Titthayara* (ISSN : 2277 7865) A Peer Reviewed Research Monthly
3. *Sraman* (ISSN : 0975 8550) A Peer Reviewed Research Monthly